गवर्नरों को इनके प्रशासनाधिकारी नियुक्त करने का अधिकार दिया गया। उनमें जो पूंजीयों के अड्डे थे वे सब तोड़ दिए गए। लेकिन दुकानों को दान की आमदनी का जो 10 वाँ हिस्सा मिलता था, उसमें कटौती नहीं की गई। समूराइयों के भत्तों में 50% की कमी कर दी गई। बाद में सामंतों के भत्तों में और काट-छांट कर दिया गया क्योंकि सरकार के लिए इतना खर्च उठा पाना संभव नहीं था। इस प्रकार से जापान की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति में एक महान परिवर्तन हुआ प्राचीन काल से चली आ रही सामंतवादी प्रथा का अब अंत हो गया तथा केन्द्रीय सरकार की सत्ता सर्वोच्च हो गई और जापान एक राष्ट्र बन गया।

किसानों की स्थिती में सुधार :-

सामंतवादी प्रथा के अंत हो जाने से किसानों की स्थिति पहले की अपेक्षा अच्छी हो गई। अब किसानों का अपने खेतों पर स्वत्व अधिकार स्थापित हो गया। पहले सामंत किसानों से उपज का एक निश्चित भाग लगान के रूप में लेते थे लेकिन अब सरकार उपज के भाग के स्थान पर सिक्कों के रूप में मालगुजारी लेना शुरू कर दिया इससे किसानों को बहुत लाभ पहुँचा लेकिन नई सरकार के बढ़ते हुए खर्च की वजह से वह किसानों की उन सारे आकांक्षाओं को पूरा न कर सका जिसकी आशा के साथ उन्होंने शोगून व्यवस्था का विरोध तथा मेइजी व्यवस्था का समर्थन किया था। अतः किसानों ने इस नए शासन के विरोध में विद्रोह शुरू कर दिया, तो सरकार ने 1876 ई० में लगान की दर जमीन के कीमत के 3% से घटाकर $2\frac{1}{2}$% करनी पड़ी लेकिन इससे भी कोई खास राहत नहीं मिला।

अतः अब सरकार किसानों की स्थिति में सुधार करने के लिए दूसरे उपायों का आवलंबन किया और सरकार अब किसानों को हर तरह की राजकीय सहायता दी ताकि वे पैदावार बढ़ा सकें उन्हें नए वैज्ञानिक तरीकों से खेती करने की विधी बताई गई, उत्तम बीजों का प्रबंध किया गया। लेकिन इससे भी किसान

लेकिन उस परिस्थिति [illegible] थी, जो किसानों को संतुष्ट नहीं कर रही थी।

संतुष्ट नहीं हुए क्योंकि उनसे बहुत कड़ा लगान वसूल किया जाता था। अतः इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नई सरकार ने किसानों की स्थिति में सुधार करने का प्रयास हर तरह से किया, लेकिन वह अपने कार्यों में पूर्णतः सफल नहीं हो पाया।

शिक्षा में सुधार :-

जापान के आधुनिकीकरण के लिए यह आवश्यक था कि अब शिक्षा में सुधार के लिए व्यापक कार्य किया जाए। अतः सरकार ने पुनः स्थापना के बाद शिक्षा में प्रगति के लिए विभिन्न प्रयास शुरू किए। इस क्रम में सबसे पहले 1868 के शाही शापथ निर्देश 'हर स्थान से ज्ञान प्राप्त किया जाए' के अनुसार 1871 ई० में शिक्षा विभाग की स्थापना की गई। इसके लिए एक कानून बनाकर व्यवस्था कर दी गई की "हर व्यक्ति ऊँचा और नीचा स्त्री और पुरुष शिक्षा प्राप्त करे जिससे सारे समाज में कोई भी परिवार और परिवार का कोई भी व्यक्ति अशिक्षित और अज्ञानी न रह जाए।" प्राथमिक शिक्षा सबके लिए अनिवार्य कर दी गई। सारे देश को आठ विश्वविद्यालय क्षेत्रों में बाँटा गया। इन क्षेत्रों में 32 माध्यमिक प्रदेश बनाए गए। हर प्रदेश को 210 प्राथमिक पाठशाला हलकों में विभक्त किया गया। इस प्रकार हर 600 आदमीयों के लिए एक प्राथमिक पाठशाला उपलब्ध हो गई। 6 वर्ष के बालक बालिकाओं के लिए पहले 4 वर्ष बाद में 6 वर्ष का शिक्षणकाल पूरा करना अनिवार्य कर दिया गया।

जापान में अनेक विश्व विद्यालयों की स्थापना हुई। स्त्री शिक्षा पर भी अब काफी ध्यान दिया जाने लगा, तथा 1913 ई० में जापान में एक महिला विश्व विद्यालय की स्थापना हुई। नई-2 जानकारी प्राप्त करने के लिए जापानियों में बड़ा उत्साह था और यह यूरोपीय भाषा के माध्यम से ही संभव था। अतः इस युग में अंग्रेजी भाषा को माध्यमिक और उच्चतर पाठ्यक्रमों का अंग बनाया गया। अर्थात, इस नई शिक्षा पद्धति में पाश्चात्य विद्याओं को प्रमुख स्थान दिया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में जापान में काफी सुधार हुआ।

औद्योगिक विकास :- जापान की सरकार ने सबसे अधिक ध्यान देश के औद्योगिक विकास पर दिया। जापानी लोग यह अनुभव कर रहे थे कि व्यवसाय के क्षेत्र में वे पाश्चात्य राज्य की तुलना में बहुत पिछड़े हैं और जब तक वे पर्याप्त आर्थिक विकास नहीं कर लेते तब तक पश्चिमी राज्यों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। अतः जापान में शीघ्र ही नए-2 कल कारखाने स्थापित किए गए और यूरोप तथा अमेरिका से मशीनें मँगवाई गई। सरकार की ओर से जापान में कल कारखाने खोलने के लिए लोगों को खूब प्रोत्साहित किया गया। इसके परिणाम स्वरूप कुछ ही वर्षों के अंदर जापान में औद्योगिक क्रांति हो गई और जापान कल कारखानों का देश हो गया। जापान के सरकार की यह नीति थी कि ऐसे व्यावसायों के विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए जो सैनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो इसलिए जापान में खाने खोदी गई लोहा इस्पात के व्यवसाय को उन्नत किया गया तथा युद्धोपयोगी सामग्री के उत्पादन के लिए कारखाने खोले गए। वाष्प शक्ति के विकास पर विशेष बल दिया गया। औद्योगिक क्षेत्र में कुछ वर्षों में जापान ने इतनी उन्नति कर ली कि वह यूरोप के किसी भी राज्य का इस क्षेत्र में मुकाबला कर सकता था।

इसके अलावा यातायात और संवादवहन के साधनों में विकास के लिए भी प्रयास किया गया। 1872 ई० में जापान में सर्वप्रथम रेल लाइन का निर्माण शुरू हुआ। रेल की ये लाइनें आंतरिक व्यापार व्यवसाय की उन्नति में प्रयाप्त सहायता पहुंचा रही थी। इसके साथ ही जापान की सरकार ने डाक विभाग का संगठन भी किया। 1868 में टेलीग्राफ का जापान में पहले पहल प्रवेश हुआ। कुछ ही दिनों में जापान में डाकघरों की स्थापना भी हो गई। व्यापारिक गतिविधियों को चलाने के लिए तथा लोन लेकर नए व्यापार की शुरुआत करने के लिए जापान में बैंकों की स्थापना की गई। औद्योगीकरण के लिए खानों का विकास जरूरी था। 1869 में होजन में आधुनिक ढंग की कोयले की खानें शुरू हुई। 1878 ई० में खान विभाग आरंभ हुआ